ANISH KHAN IMAM KA GHULAM / MORENA M.P. (476001) MOB. 7723931357
ईसाले सवाब की
शरई हैसियत
रज़वी किताब घर
425 मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली-7

(मअ तरीक़ए फातिहा)

लेखक

हज़रत अल्लामा मोहम्मद शफीअ़ साहब
ओकाड़वी अलैहिर्रहमा

अनुवादक

मो0 हसीब अख़्तर - मो0 सज्जाद आ़लम

बएहतिमाम

हाफिज़ क़मरूद्दीन रज़वी

रज़वी किताब घर

423, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली—6

Ph. 3264524

Rs. 8

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
نحمدہٗ ونصلے علےٰ رسولہ الکریم

इबादत की तीन क़िस्में है बदनी, माली, मोरक्कब-

बदनी: जिसका तअ़ल्लुक़ बदन से हो, जैसे तिलावते कुरआन, तस्बीह़ व तहलील दुआ व इस्तग़फ़ार और नमाज़ व रोज़ा वग़ैरह।

माली- जिसका तअ़ल्लुक़ माल से हो जैसे ज़कात, सदक़ात और ख़ैरात वग़ैरहा।

मोरक्कब- जिस का तअ़ल्लुक़ दोनों से हो जैसे हज कि इस में माल भी ख़र्च होता है और मक्का मोकर्रमा पहुंच कर जिस्मानियत के साथ हज के अरकान भी अदा करने पड़ते है।

मुसलमान इन इबादतों में से इख़लास के साथ जब कोई इबादत करता है तो अल्लाह तआला अपने फ़ज़लो करम से उस को अजरो सवाब अता फ़रमाता है अब सवाल यह है कि मुसलमान अपनी किसी इबादत का सवाब किसी मोतवफ़्फ़ा मुसलमान को पहुंचा सकता है या नहीं? मोतज़ेला का मज़हब यह है कि न तो सवाब पहुंचता है और न उस से मुर्दों को कोई नफ़ा पहुंचता है, और जम्हूर अहले सुन्नत व जमाअत का मज़हब यह है कि सवाब पहुंचता है और इस से मुर्दों को भी नफ़ा पहुंचता है।

अगरचे मोतज़ेला तो नहीं रहे लेकिन बद क़िस्मती से मुसलमानों में फिर ऐसे चन्द अफ़राद पैदा हो गए है जिन्होंने मोतज़ेला की तरह से इसाले सवाब का इनकार शुरू कर दिया है। हालांकि वह .कुरआन व हदीस पर ईमान व अमल रखने के

मुद्दई है तअज्जुब है कि .कुरआन व हदीस पर ईमान व अमल रखने के मुद्दई होकर ईसाले सवाब और उस के मुफ़ीद व नाफ़े होने के मुनकिर कैसे हो गये है क्यों कि .कुरआन व हदीस पर ईमान व अमल का दावा और ईसाले सवाब का इनकार, यह दोनों चीज़ें तो ऐसी है जो कभी जमा नहीं हो सकतीं, ऐसे हज़रात को हस्बे ज़ैल दलाइल में गहरी नज़र से ग़ौर करना चाहिये।

बदनी इबादत

मय्यत के लिए दुआ व इस्तग़फ़ार करना-

1. हज़रत नोअ़मान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ (ابوداؤد) दुआ इबादत है (अबुदाऊद)

2. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ (كنزالاعمال) दुआ इबादत का मग़ज़ है। (कंज़ुलआमाल)

इन दोनों हदीसों से साबित हुवा कि दुआ इबादत बल्कि इबादत का मग़ज़ है।

3. अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَالَّذِيْنَ جَاؤُا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا

वह जो उन के बाद आए वह यूं दुआ करते है। ऐ हमारे परवरदिगार हम को बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को भी बख़्श दे जो हमसे पहले

بالْاِیمَانِ۔ (قرآن کریم پ۲۸) बा-ईमान गुज़र चुके है।
(.कुरआने करीम पा. 28)

ग़ौर फ़रमाइये! इस आयते करीमा में अल्लाह तआला मुसलमानों के इस मुबारक फ़ेल (काम) बतौर इस्तेहसान व तारीफ़ के बयान फ़रमा रहा है कि वह बाद में आने वाले मुसलमान जहां अपने लिए दुआए बख़शिश करते है वहां अपने मुसलमान भाईयों के लिए भी दुआए बख़शिश करते है जो उन से पहले गुज़र चुके है।

जब साबित हो गया कि दुआ इबादत है तो मालूम हुआ कि ज़िन्दों की इबादत यानी दुआ से मुर्दों को फ़ाइदा पहुंचता है। अगर यह न माना जाये तो फिर मुसलमान का अपने मुतवफ़्फ़ा (मरे हुये) भाइयों के लिए दुआए बख़शिश करना फ़ुजूल और लग़्व क़रार पाएगा और फिर यह भी कहना पड़ेगा कि .कुरआन मआज़ अल्लाह फ़ुज़ूल और लग़्व कामों का बतौरे तारीफ़ व इस्तेहसान बयान करता है। साबित हुआ कि ज़िन्दा मुसलमान का मुर्दा मुसलमानों के लिए दुआए बख़िशश करना मुर्दों के अफ़्व व बख़शिश और रफ़अ़े दरजात का सबब है।

4. चुनान्चे इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है

وَقَدْ نَقَلَ غَيْرُ وَاحِدٍ الْإِجْمَاعَ عَلٰى اَنَّ الدُّعَاءَ يَنْفَعُ الْمَيِّتَ وَ دَلِيْلُهٗ مِنَ الْقُرْاٰنِ قَوْلُهٗ تَعَالٰى وَالَّذِيْنَ جَآءُوْا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ

और इस पर बहुत से उलमा ने इजमा नक़ल किया है कि बेशक दुआ मय्यत को नफ़ा देती है और उस की दलील .कुरआन शरीफ़ मे

رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ (الآية) (شرح الصدور صـ ۱۲۷)

अल्लाह तआला का यह क़ौल है।

(शरहुस्सुदूर 127)

5. अल्लाह तआला .क़ुरआन मजीद में हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम की दुआ का ज़िक्र भी बतौरे तारीफ़ बयान फ़रमाता है।

رَبَّنَا اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ (قرآن کریم پاره ۱۳)

ऐ हमारे परवरदिगार! मुझ को और मेरे माँ बाप को और मुमेनीन को बख़्श दे जिस दिन हिसाब क़ायम हो।

(.क़ुरआन करीम पा. : 13)

देखिये हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम अपने मुतवफ़्फ़ा वालिदैन और मुसलमानों के लिए दुआए बख़्शिश फ़रमा रहे है।[1] दुआ इबादत है तो मालूम हुआ कि उनकी इबादत से उनके वालिदैन और मुसलमानों को नफ़ा ज़रूर होगा। वरना हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम का दुआ करना फ़ुज़ूल ठहरेगा। क्या यहां यह कहना मुनासिब होगाा कि हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम जैसा जलीलुलक़द्र पैग़म्बर फ़ुज़ूल काम का मुरतकिब हुआ और .क़ुरआन करीम ने .फ़ुज़ूल काम का ज़िक्र फ़रमाया? (मआज़ अल्लाह)

6. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह फ़रिश्ते जो अर्श को

---

1. हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम के वालिदैन कौन थे? इसकी नफ़ीस तहक़ीक़ मुवल्लिफ़ की किताब "ज़िक्रे हुसैन" में मुलाहिज़ा फ़रमाइये।

उठाने वाले है और उस के इर्द गिर्द है वह हमारी तस्बीह व तहमीद के साथ-साथ

وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

(قرآن کریم پارہ ۲۴)

मोमिनों के लिए दुआए बख़्शिश भी करते है

(क़ुरआन करीम पारा : 24)

इस आयत से मालूम हुआ कि फ़रिश्ते अल्लाह की तस्बीह व तहमीद के साथ मोमिनों के लिए दुआए बख़्शिश भी करते है। देखिये दुआए बख़्शिश मांगने वाले फ़रिश्ते है। और उसका फ़ायदा मुसलमानों को पहुंचेगा अगर उनकी दुआ का कोई फ़ाइदा मुसलमानों के हक़ में मुरत्तब न हो तो उनका मुसलमानों के लिए दुआ करना बेकार होगा। और फ़रिश्ते मासूम और मामूर मिनल्लाह होते है। उन का कोई काम बेकार और खि़लाफ़े अमर नहीं होता। लिहाज़ा साबित हुआ कि फ़रिश्तों की इबादत यानी दुआए बख़्शिश का फ़ायदा मुसलमानों को ज़रूर पहुंचेगा मालूम हुआ कि एक की इबादत का दूसरे को फ़ायदा पहुंच सकता है बशर्ते कि दूसरे को फ़ायदा पहुचांना मक़सूद हो।

7. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते है कि- हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया-

مَا الْمَيِّتُ فِي الْقَبْرِ اِلَّا كَالْغَرِيْقِ الْمُتَغَوِّثِ يَنْتَظِرُ دَعْوَةً تَلْحَقُهٗ مِنْ اَبٍ اَوْ اُمٍّ اَوْ اَخٍ اَوْ صَدِيْقٍ فَاِذَا لَحِقَتْهُ كَانَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنَ

मुर्दों की हालत क़ब्र मे डूबते हुए फ़रयाद करने वाले की तरह होती है वह इन्तेज़ार करता है कि उस के बाप या माँ या भाई या दोस्त की तरफ़ से उस को दुआ पहुंचे

الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا وَاِنَّ
اللّٰهَ تَعَالٰى لَيُدْخِلُ
اَهْلَ الْقُبُوْرِ مِنْ دُعَاءِ
اَهْلِ الْاَرْضِ اَمْثَالَ
الْجِبَالِ وَاِنَّ هَدِيَّةَ
الْاَحْيَاءِ اِلَى
الْاَمْوَاتِ الْاِسْتِغْفَارُ
لَهُمْ۔

(مشکوٰۃ ص ۲۰۶)

और जब उसको किसी की दुआ पहुंचती है तो वह दुआ का पहुंचना उसको दुनिया व माफ़ीहा से महबूब तर होता है और बेशक अल्लाह तआला अहले ज़मीन की दुआ से अहले क़ुबूर को पहाड़ों की मिस्ल अजरो रहमत अता करता है और बेशक ज़िन्दों का तोहफ़ा मुर्दों की तरफ़ यही है कि उन के लिए बख़शिश की दुआ मांगी जाए। (मिश्कात पेज 206)

इस हदीस से मुर्दा का दुआये बख़्शिश का मुन्तज़िर होना और ज़िन्दों के हदिये और तोहफ़े यानी दुआए बख़्शिश का उस के लिए बहुत ही ज्यादा मुफ़ीद होना बख़ूबी साबित है।

8. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

مَا مِنْ رَجُلٍ مُّسْلِمٍ
يَمُوْتُ فَيَقُوْمُ عَلٰى جَنَازَتِهٖ
اَرْبَعُوْنَ رَجُلًا لَّا
يُشْرِكُوْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا
اِلَّا شَفَّعَهُمُ اللّٰهُ فِيْهِ۔

(ابوداؤد شریف)

जिस मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पर ऐसे चालीस मुसलमान खड़े हो जायें जिन्होंने शिर्क न किया हो तो अल्लाह तआला उन की शिफ़ाअत मय्यत के हक़ में क़बूल फ़रमाता है यानी बख़्श देता है।

(अबूदाऊद शरीफ़)

देखिये चालीस ज़िन्दा मुसलमानों का शिफ़ाअत करना यानी दुआए बख़्शिश करना मुर्दा के हक़ में बख़्शिश का सबब हुआ।

9. हजरत मालिक बिन बुहैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते है कि मैने सुना हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि:

مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَمُوْتُ فَيُصَلِّيْ عَلَيْهِ ثَلَاثَةُ صُفُوْفٍ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ اِلَّا اَوْجَبَ

(مشکوٰۃ ص ۱۴۷)

जिस मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पर मुसलमानों की तीन सफ़ें हो जाएं उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है।

(मिश्कात स0147)

इसी लिए जनाज़ा पर तीन सफ़ें की जाती है और ज़ाहिर है कि सफ़ें बनाना और नमाज़ पढ़ना मय्यत का नहीं बल्कि दूसरे लोगों का फ़ेल है जो मय्यत के लिए बाइसे मग़फ़िरत हुआ।

10. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

يَتْبَعُ الرَّجُلَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْحَسَنَاتِ اَمْثَالُ الْجِبَالِ فَيَقُوْلُ اَنّٰى هٰذَا؟ فَيُقَالُ بِاسْتِغْفَارِ وَلَدِكَ لَكَ.

(الادب المفرد للبخاری ص ۹ شرح الصدور ص ۱۲۷)

कि क़यामत के दिन पहाड़ों जैसी नेकियाँ इन्सान के (आमाल से) लाहिक़ होंगी तो वह कहेगा कि यह कहां से है? तो फ़रमाया जाएगा कि यह तुम्हारी औलाद के इस्तिग़फ़ार के सबब से है जो तुम्हारे लिए किया।

(अलअदबुल मुफ़रद लिलबुख़ारी सं0 9)

11. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जन्नत में अपने नेक बन्दे का दर्जा बुलन्द फ़रमाया।

فَيَقُوْلُ يَا رَبِّ اَنّٰى لِىْ هٰذِهٖ؟

तो वह अर्ज़ करता है ऐ मेरे रब्ब मेरा दर्जा क्यों कर बुलन्द हुआ?

فَيَقُوْلُ بِاسْتِغْفَارِ وَلَدِكَ لَكَ۔

इरशाद हुआ कि तेरा बेटा जो तेरे लिए दुआए बख़्शिश मांगता है उस के सबब से।

(مشكوٰة ص ٢٥٦)

(मिश्कात: 256)

इस हदीस से साबित हुआ कि किसी नेक बन्दे या किसी बुर्ज़ुग के लिए दुआए बख़्शिश की जाए तो उस के दर्जे बुलन्द हो जाते है और गुनहगार के लिए की जाए तो उस से सख़्ती और अज़ाब दूर हो जाता है जैसा कि पहले बयान हुआ

12. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

اُمَّتِىْ اُمَّةٌ مَّرْحُوْمَةٌ تَدْخُلُ قُبُوْرَهَا بِذُنُوْبِهَا وَتَخْرُجُ مِنْ قُبُوْرِهَا لَا ذُنُوْبَ عَلَيْهَا تُمَحَّصُ عَنْهَا بِاسْتِغْفَارِ الْمُؤْمِنِيْنَ۔

मेरी उम्मत, उम्मते मरहूमा है वह क़ब्रो में गुनाहो के साथ दाखिल होगी और जब क़ब्रों से निकलेगी उस पर कोई गुनाह नही होगा अल्लाह तआला मुमिनों के इस्तिग़फ़ार की वजह से उस को गुनाहों से पाक व साफ़ कर देगा

13. मज़हबे हनफ़ी के अक़ायद की मुसल्लेमा किताब शरह

अक़ाइदे नसफ़ी में है कि-

وَفِیْ دُعَاءِ الْاَحْیَاءِ لِلْاَمْوَاتِ اَوْصَدَقَتِهِمْ عَنْهُمْ نَفْعٌ لَهُمْ خِلَافًا لِلْمُعْتَزِلَةِ۔

ज़िन्दों का मुर्दों के लिए दुआ करना या सदक़ा व ख़ैरात करना मुर्दों के लिए नफ़ा का बाइस है और मुअ़तज़ेला उस के ख़िलाफ़ है।

14. इमामे अजल हज़रत अल्लामा अली क़ारी मक्की मिरक़ात शरहे मिश्कात में फ़रमाते है-

कि अहले सुन्नत का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि मुर्दों को ज़िन्दों के अमल से फ़ाइदा पहुंचता है। (शरहे फ़ेक़्हे अकबर)

मय्यत के लिए नमाज़, रोज़ा और हज करना

15. एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ की या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मै अपने वालिदैन के साथ जब कि वह ज़िन्दा थे नेक सुलूक किया करता था। अब उन वालिदैन की वफ़ात के बाद मै उनके साथ कैसे नेकी करूं? आपने फ़रमाया-

اِنَّ مِنَ الْبِرِّ اَنْ تُصَلِّیَ لَهُمَا مَعَ صَلٰوتِكَ وَاَنْ تَصُوْمَ لَهُمَا مَعَ صِيَامِكَ۔

(شرح الصدور ص ۱۲۹)

अब तेरा उनके साथ नेकी करना यह है कि तू अपनी नमाज़ के साथ उन के लिए भी (नफ़्ली) नमाज़ पढ़ और अपने रोज़ों के साथ उनके लिए भी (नफ़्ली) रोज़े रख।

(शरहुस्सुदूर स0 129)

16. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दिक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती है कि

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صِيَامٌ صَامَ عَنْهُ وَلِيُّهُ (مسلم)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मर जाये और उसके ज़िम्मे रोज़े बाक़ी हों तो उसकी तरफ़ से उसका वली रोज़े रखे।

17. हज़रत बुरैदह रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद से रिवायत करते है कि मै हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठा हुआ था कि एक औरत आई। उसने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरी माँ मर गई है।

إِنَّهُ كَانَ عَلَيْهَا صَوْمُ شَهْرٍ أَنَا صُوْمُ عَنْهَا؟ قَالَ صُوْمِيْ عَنْهَا قَالَتْ إِنَّهَا لَمْ تَحُجَّ قَطُّ أَفَاحُجُّ عَنْهَا؟ قَالَ حُجِّيْ عَنْهَا.

مسلم كتاب الصوم

और एक माह के रोज़े उसके ज़िम्मे थे क्या मै उनकी तरफ़ से रोज़े रखूं? फ़रमाया हां तू उसकी तरफ़ से रोज़े रख! उसने कहा मेरी माँ ने कभी हज भी नहीं किया था क्या मै उसकी तरफ़ से हज करूं? फ़रमाया उसकी तरफ़ से हज भी कर।

इन तीनो हदीसों से साबित हुआ कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुतवफ़्फ़ा की तरफ़ से नमाज़, रोज़ा, हज करने का हुक्म दिया। ज़ाहिर है कि नमाज़, रोज़ा, हज करने वाले ज़िन्दों की इबादत से उन मुर्दों को नफ़ा पहुंचेगा। जिन के लिए वह की गई। अगर ज़िन्दों की इबादत से मुर्दों को नफ़ा न

पहुंचता होता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी इजाज़त न देते बल्कि फ़रमा देते कि तुम्हारी इबादत से उनको कोई नफ़ा नहीं पहुंचेगा लिहाज़ा उनकी तरफ़ से इबादत करना फ़ुज़ूल है।

18. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि क़बीला जुहैना की एक औरत ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ की या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

إِنَّ أُمِّيْ نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ فَلَمْ تَحُجَّ حَتّٰى مَاتَتْ أَفَأَحُجُّ عَنْهَا؟ قَالَ حُجِّيْ عَنْهَا۔ (بخاری شریف)

मेरी माँ ने हज की नज़र मानी थी लेकिन वह बग़ैर हज किये मर गई है क्या मै उसकी तरफ़ से हज करूं? आप ने फ़रमाया तू उसकी तरफ़ से हज कर।

देखिये एक ज़िन्दा औरत पर वाजिब व ज़रूरी था कि वह हज करे लेकिन जब वह हज तर्क करके मर गई तो हज उसके ज़िम्मे था जिस की तरफ़ से वह माख़ूज़ और मुस्तहिके सज़ा थी मगर जब उसके ज़िन्दा वारिस के अदा करने से उसकी तरफ़ से वह हज अदा हो गया तो वह मुवाख़िज़ा और सज़ा से रिहा होगई। पस मालूम हुआ कि ज़िन्दा के अमल से मुर्दा को नफ़ा पहुंचता है। बशर्ते कि उसको नफ़ा पहुंचाने की नीयत से किया जाये।

19. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

مَنْ حَجَّ عَنْ وَالِدَيْهِ بَعْدَ وَفَاتِهِمَا كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ عِتْقًا مِّنَ النَّارِ وَكَانَ لِلْمَحْجُوْجِ عَنْهُمَا اَجْرُ حَجَّةٍ تَامَّةٍ مِنْ غَيْرِ اَنْ يُّنْقَصَ مِنْ اَجُوْرِهِمَا شَيْئٌ قَالَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا وَصَلَ ذُوْ رَحِمٍ رَحْمَهُ بِاَفْضَلَ مِنْ حَجَّةٍ يُّدْخِلُهَا عَلَيْهِ بَعْدَ مَوْتِهِ فِيْ قَبْرِهٖ۔ (شرح الصدور ص ١٢٩)

जो शख़्स अपने वालिदैन की वफ़ात के बाद उनकी तरफ़ से हज अदा करे अल्लाह तआला उसके लिए जहन्नम से आज़ादी लिख देता है और उसको हज्जे कामिल का सवाब मिलता है और उसके वालिदैन के सवाब में भी कोई कमी नही होती और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अफ़ज़ल तरीन सिला रहमी मय्यत की तरफ़ से हज करना है।

(शरहुस्सुदूर स0 129)

20. हज़रत जैद इब्ने अरक़म फ़रमाते है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया!

مَنْ حَجَّ عَنْ اَبَوَيْهِ وَلَمْ يَحُجَّا جَزٰى عَنْهُمَا وَبُشِّرَتْ اَرْوَاحُهُمَا فِى السَّمَاءِ وَكُتِبَ عِنْدَ اللّٰهِ بَرًّا

(شرح الصدور ص ١٢٩)

जो शख़्स अपने वालिदैन की तरफ़ से हज करे। जिन्होंने हज न किया हो तो यह हज उनकी तरफ़ से काफ़ी होगा और उनकी अरवाह को आसमानों मे बशारत दी जायेगी और यह शख़्स (हज करने वाला) अल्लाह तआला के नज़दीक फ़रमांबरदार लिखा जायेगा। (शरहुस्सुदूर स0 129)

21. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

مَنْ حَجَّ عَنْ مَيِّتٍ فَلِلَّذِی حَجَّ عَنْهُ مِثْلُ اَجْرِهٖ
(شرح الصدور ص ۱۲۹)

जो शख़्स मय्यत की तरफ़ से हज करे तो मय्यत और हज करने वाले दोनों को पूरा-पूरा सवाब, मिलेगा।

22. मज़हबे हनफ़ी की मशहूर व मअरूफ़ किताब हिदाया शरीफ़ में है-

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَهٗ اَنْ یَّجْعَلَ ثَوَابَ عَمَلِهٖ لِغَیْرِهٖ صَلٰوةً اَوْصَوْمًا اَوْغَیْرَهَا عِنْدَ اَهْلِ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ

कि बेशक इंसान अपने अमल का सवाब दूसरे शख़्स को पहुंचा सकता है ख़्वाह नमाज़ का हो या रोज़ा का हो या सदक़ा का हो। यह अहले सुन्नत व जमाअत का मज़हब है।

23. हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते है-

بعد از فراغ دوگانہ ثواب امیر سیّد علی ہمدانی بخواند۔

बाद अज़ क़राअत दोगाना पढ़े और उसका सवाब मीर सैयद अली हमदानी को बख़्शे।
(इन्तबाह फ़ी सलासिले औलिया अल्लाह 116)

मय्यत के लिए क़ुरआन व फ़ातिहा ख़्वानी करना

24. हज़रत अनस रज़ियल्लाह अन्हु फ़रमाते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

مَنْ دَخَلَ الْمَقَابِرَ فَقَرَأَ سُوْرَةَ يٰسٓ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَكَانَ لَهٗ بِعَدَدِ مَنْ فِيْهَا حَسَنَاتٌ۔ وَقَالَ الْقُرْطُبِيُّ فِيْ حَدِيْثِ اِقْرَأُوْا عَلٰى مَوْتَاكُمْ يٰسٓ هٰذَا يَحْتَمِلُ اَنْ تَكُوْنَ هٰذِهِ الْقِرَاءَةُ عِنْدَ الْمَيِّتِ فِيْ حَالِ مَوْتِهٖ وَيَحْتَمِلُ اَنْ تَكُوْنَ عِنْدَ قَبْرِهٖ۔

(شرح الصدور ص ۱۳۰)

जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो और सूरह यासीन पढ़े तो अल्लाह तआला तमाम क़ब्र वालों से तख़फ़ीफ़ फ़रमाता है और उस पढ़ने वाले को बक़द्रे उनकी गिनती के नेकियां अता फ़रमाता है।

और अल्लामा क़रतबी ने इस हदीस के बारे में (कि तुम अपने मुर्दों पर यासीन पढ़ा करो) फ़रमाया कि यह हदीस इसकी भी मुहतमिल है कि यह क़रआत मय्यत के नज़दीक इस हाल में हो जबकि वह मर रहा हो और इसकी भी मुहतमिल है कि उसकी क़ब्र के नज़दीक हो।

(शरहुस्सुदूर स0 130)

25. हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू फ़रमाते है कि हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि -

مَنْ مَرَّ عَلَى الْمَقَابِرِ وَقَرَأَ قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ إِحْدٰى عَشَرَةَ مَرَّةً ثُمَّ وَهَبَ أَجْرَهُ لِلْأَمْوَاتِ أُعْطِيَ مِنَ الْأَجْرِ بِعَدَدِ الْأَمْوَاتِ۔

जो शख़्स क़ब्रों पर गुज़रा और उसने सूरह इख़लास को ग्यारह मर्तबा पढ़ा फिर उसका सवाब मुर्दों को बख़्शा तो उसको मुर्दों की तादाद के बराबर अज्र व सवाब मिलेगा।

(दारे कुतनी, दुर्रे मुख़्तार, बहस क़राअतुल मय्यत, बाबुद्दफ़न, शरहुस्सुदूर 130)

26. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

مَنْ دَخَلَ الْمَقَابِرَ ثُمَّ قَرَأَ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَقُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ وَأَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ثُمَّ قَالَ اللّٰهُمَّ إِنِّي قَدْ جَعَلْتُ ثَوَابَ مَا قَرَأْتُ مِنْ كَلَامِكَ لِأَهْلِ الْمَقَابِرِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ كَانُوا شُفَعَاءَ لَهُ إِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى

(شرح الصدور ص ۱۳۰)

जो शख़्स क़ब्रिस्तान जाये फिर एक मर्तबा सूरह फ़ातिहा और क़ुल हुवल्लाहु अहद और अलहा-कुमुत्तकासुरू, पढ़कर कहे कि ऐ अल्लाह! जो कुछ मैने तेरे कलाम से पढ़ा है उसका सवाब मैने इन क़ब्र वाले मोमिनीन और मोमिनात को बख़्शा तो वह तमाम मुर्दे अल्लाह की बारगाह में उसके लिए सिफ़ारिश करते है।

(शरहुस्सुदूर स0 130)

27. इमाम शाअबी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है-

كَانَتِ الْأَنْصَارُ إِذَا مَاتَ لَهُمْ

अंसार का तरीक़ा था कि

الْمَيِّتُ اِخْتَلَفُوْا اِلٰى قَبْرِهٖ يَقْرَؤُوْنَ لَهُ الْقُرْاٰنَ۔

(شرح الصدور ص۱۳۰)

जब उनका कोई मर जाता तो वह बार-बार उसकी क़ब्र पर जाते और उसके लिए क़ुरआन पढ़ते।

(शरहुस्सुदूर स0 130)

28. अल्लामा बदरुद्दीन अइनी शारेह सहीह बुख़ारी-शरह हिदाया मे फ़रमाते है कि -

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ مَا زَالُوْا فِىْ كُلِّ عَصْرٍ يَقْرَؤُوْنَ الْقُرْاٰنَ وَيَهْدُوْنَ ثَوَابَهٗ وَلَا يُنْكِرُ ذٰلِكَ مُنْكِرٌ فَكَانَ اِجْمَاعًا عِنْدَ اَهْلِ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ۔

मुसलमान हर ज़माना मे क़ुरआन पढ़कर उसका सवाब (मुर्दों को) बख़्शाते रहे है और इसका इंकार मुन्किर भी नही करता और अहले सुन्नत व जमाअत का तो इस पर इजमाअ है।

29. इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है -

اِذَا دَخَلْتُمُ الْمَقَابِرَ فَاقْرَءُوْا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَالْمُعَوِّذَتَيْنِ وَقُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ وَجْعَلُوْا ذٰلِكَ لِاَهْلِ الْمَقَابِرِ فَاِنَّهٗ يَصِلُ اِلَيْهِمْ

(شرح الصدور ص۱۳۰)

कि जब मकाबिर यानी क़ब्रिस्तान जाओ तो सूरह फ़ातिहा और मऊज़तैन और सूरह इख़लास पढ़ो और उसका सवाब अहले मकाबिर को पहुंचाओ। क्योंकि वह उनको पहुंचता है।

(शरहुस्सुदूर स0 130)

30. ज़अफ़रानी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है -

اِنِّىْ سَاَلْتُ الشَّافِعِىَّ رَحِمَهٗ

मैने इमाम शाफई

اللّٰہ عن القراءۃ عند القبر فقال لا باس بہ (شرح الصدور ص ۱۳۰)

रहमतुल्लाह अलैह से पूछा कि क़ब्र पर क़ुरआन पढ़ना कैसा है? फ़रमाया कि इसमें कोई हरज नही है।

(शरहुस्सूदूर स0 130)

31. इमाम नुव्वी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है-

يستحب لزائر القبور ان يقرأ ما تيسر من القران و يدعو لهم عقبها نص عليه الشافعي واتفق عليه الاصحاب وزاد في موضع اخر وان ختموا القران على القبر كان افضل (شرح الصدور ص ۱۳۰)

जायरे क़ुबूर के लिए मुस्तहब यह है कि जितना उससे हो सके कुरआन पढ़े और अहले क़ुबूर के लिए दुआ करे। इमाम शाफ़ई ने इस पर नस पेश की है। और तमाम शाफ़ई हज़रात इस पर मुत्तफ़िक़ है और अगर क़ब्र पर क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म किया जाये तो और भी अफ़ज़ल है।

32. इमाम क़रतबी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते है कि-

كان الشيخ عز الدين بن عبد السلام يفتي بانه لا يصل الى الميت ثواب ما يقرأ له فلما توفي راه بعض اصحابه فقال له انك كنت تقول انه لا يصل الى الميت ثواب ما يقرء

शैख़ इज़्ज़ुद्दीन बिन अब्दुस्सलाम फ़तवा दिया करते थे कि मय्यत को क़ुरआन ख़्वानी का सवाब नही पहुंचाता। जब वह फ़ौत हुए तो उनके बाज़ असहाब ने उनको ख़्वाब मे देखा पूछा कि आप फ़रमाया करते थे कि मय्यत को क़राअते

وَيُهْدَى اِلَيْهِ فَكَيْفَ الْاَمْرُقَالَ لَهٗ كُنْتُ اَقُوْلُ ذَالِكَ فِىْ دَارِ الدُّنْيَا وَالْاٰنَ فَقَدْ رَجَعْتُ عَنْهُ لَمَّا رَاَيْتُ مِنْ كَرَمِ اللّٰهِ فِىْ ذٰلِكَ وَاِنَّهٗ يَصِلُ اِلَيْهِ ثَوَابُ ذٰلِكَ

(شرح الصدور ص۱۲۳)

क़ुरआन का सवाब व हदिया नहीं पहुंचता यह बात कैसी है? फ़रमाया दुनिया में तो ऐसा ही कहा करता था। लेकिन अब मै उससे रूजूअ कर चुका हूं। क्योंकि मैने यहां आकर देखा है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से सवाब पहुंचता है।

(शरहुस्सुदूर स0 123)

33. इमाम जलालुद्दीन सोयूती रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं -

وَاَمَّا الْقِرَاءَةُ عَلَى الْقَبْرِ فَجَزَمَ بِمَشْرُوْعِيَّتِهَا اَصْحَابُنَا وَغَيْرُهُمْ

(شرح الصدور ص۱۳۰)

और रहा क़ब्रों पर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना तो उसकी मशरूइयत पर हमारे असहाब और उनके सिवा और उलमा ने इजाम किया है।

(शरहुस्सुदूर स0 130)

34. हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैह औलियाए केबार में से है। फ़रमाते है कि मै जुमा की रात को क़ब्रिस्तान मे गया। मैने देखा कि वहां नूर चमक रहा है। मैने ख़्याल किया कि अल्लाह तआला ने क़ब्रिस्तान वालों को बख़्श दिया है गै़ब से आवाज़ आई, ऐ मालिक बिन दीनार यह मुसलमानों का तोहफ़ा है जो उन्होंने क़ब्रों वालों को भेजा है, मैने कहा तुम्हे खुदा की क़सम है मुझे बताओ मुसलमानों ने क्या तोहफ़ा भेजा है?

قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
قَامَ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فَاَسْبَغَ
الْوُضُوْءَ وَصَلّٰى رَكْعَتَيْنِ
وَقَرَأَ فِيْهِمَا فَاتِحَةَ الْكِتَابِ
وَقُلْ يَا اَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ وَقُلْ
هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ وَقَالَ
اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ قَدْ وَهَبْتُ ثَوَا
بَهَا لِاَهْلِ الْمَقَابِرِ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ فَاَدْخَلَ اللّٰهُ
عَلَيْنَا الضِّيَاءَ وَالنُّوْرَ
وَالْفُسْحَةَ وَالسُّرُوْرَ
فِي الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ -
قَالَ مَالِكٌ فَلَمْ اَزَلْ
اَقْرَأُهُمَا فِيْ كُلِّ لَيْلَةِ
جُمُعَةٍ فَرَاَيْتُ النَّبِيَّ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ
وَسَلَّمَ فِيْ مَنَامِيْ يَقُوْلُ
لِيْ يَا مٰلِكُ ابْنَ دِيْنَارٍ قَدْ
غَفَرَ اللّٰهُ لَكَ بِعَدَدِ

उसने कहा एक मोमिन मर्द ने इस रात इस क़ब्रिस्तान में क़याम किया तो उसने वज़ू करके दो रकअतें पढ़ी और दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा के बाद पहली रकअत में क़ुल या अय्यु-हल काफ़िरून और दूसरी रकअत में क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ा और कहा ऐ अल्लाह! इन दो रकअतों का सवाब मैने इन तमाम क़ब्र वाले मोमिनीन को बख़्शा पस उसकी वजह से अल्लाह तआला ने हम पर यह रोशनी और नूर भेजा है और हमारी क़ब्रों में कुशादगी व फ़रहत पैदा फ़रमा दी है। हज़रत मालिक बिन दीनार फ़रमाते है उसके बाद हमेशा दो रकअतें पढ़कर हर जुमेरात मे मोमिनीन को बख़्शता। एक रात मैने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा, फ़रमाया ऐ मालिक बिन दीनार बेशक अल्लाह ने तुझको बख़्श दिया जितनी मर्तबा तूने

النُّورِ الَّذِي أَهْدَيْتَهُ إِلَى أُمَّتِي وَلَكَ ثَوَابُ ذَٰلِكَ ثُمَّ قَالَ لِي وَبَنَى اللهُ لَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ فِي قَصْرٍ يُقَالُ لَهُ الْمُنِيفُ قُلْتُ وَمَا الْمُنِيفُ ؟ قَالَ الْمُطَلُّ عَلَى أَهْلِ الْجَنَّةِ -

मेरी उम्मत को नूर का हदिया भेजा है उतना ही अल्लाह ने तेरे लिए सवाब किया है और नीज़ अल्लाह तआला ने तेरे जिए जन्नत में एक मकान बनाया है जिस का नाम मनीफ़ है। मैने अर्ज़ किया मनीफ़ क्या है? फ़रमाया जिस पर अहले जन्नत भी झांकें।

35. हज़रत हम्माद मक्की रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है कि एक रात मै मक्का मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान मे गया और वही एक क़ब्र पर अपना सर रख कर सो गया। ख़्वाब में मै ने देखा कि अहले क़ुबूर हलक़ा बांधकर बैठे हुए है। मैने कहा क्या क़यामत क़ायम हो गई है?

قَالُوا لَا ! وَلَٰكِنْ رَجُلٌ مِنْ إِخْوَانِنَا قَرَأَ قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ وَجَعَلَ ثَوَابَهَا لَنَا فَنَحْنُ نَقْتَسِمُهُ مُنْذُ سَنَةٍ

(شرح الصدور ص ۱۳۰)

उन्होंने कहा कि नही बल्कि हमारे एक मुसलमान भाई ने सूरह इख़्लास पढ़कर उसका सवाब हमें बख़्शा है जिस को हम एक साल से बांट रहे है।

(शरहुस्सुदूर स० 130)

36. शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है-

پس ازاں ہی صد و شصت مرتبہ سورہ الم نشرح خوانند پس

उसके बाद तीन सौ साठ मर्तबा सूरह अलम नश्रह फिर तीन सौ साठ बार वही दुआए

دہ مرتبہ درود خوانند ختم تمام کنند و بر قدرے شیرینی فاتحہ بنام خواجگان چشت عموماً بخوانند و حاجت از خدا تعالیٰ سوال نمایند ہمیں طور ہر روز بخوانده باشند انشاء اللہ تعالیٰ در ایام معدود مقصد بحصول انجامد۔ (انتباہ فی سلاسل اولیاء اللہ صفحہ ۱۰۰)

मज़कूर पढ़े, फिर दस मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े और ख़त्म तमाम करे और थोड़ी सी शीरीनी पर फ़ातिहा तमाम ख़्वाजगाने चिश्त के नाम से पढ़े और अपनी हाजत अल्लाह तआला से अर्ज़ करे। इसी तरह हर रोज़ करे। इन्शाअल्लाह चंद दिन में मक़सद हासिल होगा।

(इन्तबाह फी सलासिले औलिया अल्लाह स0 100)

37. यही शाह साहब रहमतुल्लाह अलैह दूसरी जगह इरशाद फ़रमाते है-

وَيَقْرَأُ شَيْئًا مِّنَ الْقُرْآنِ لِوَالِدَيْهِ ثُمَّ لِشَيْخِهٖ وَلِأُسْتَاذِهٖ ثُمَّ لِأَصْحَابِهٖ وَلِإِخْوَانِهٖ وَلِأَرْوَاحِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ.

और कुछ क़ुरआन पढ़े और वालिदैन व पीर व उस्ताद और अपने दोस्तों और भाइयों और सब मोमिनीन और मोमिनात की अरवाहे (तय्यबा) को सवाब बख़्शे।

(इन्तेबाह फी सलासिले औलिया अल्लाह स0 116)

38. हज़रत अल्लामा क़ाज़ी सनाउल्लाह साहब पानीपती रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है-

جمہور فقہاء حکم کردہ اند کہ ثواب قرأت قرآن و اعتکاف بمیت میرسد و بہ قال ابو حنیفہ و مالک و

कि तमाम फ़ोक़हा किराम ने हुक्म किया है कि क़ुरआन मजीद पढ़ने और एतिकाफ़ करने का सवाब मय्यत को

احمد و حافظ شمس الدین ابن عبدالواحد گفتہ کہ از قدیم در شہر مسلمانان جمع می شوند و برائے اموات قرآن مجید می خوانند پس اجماع شد۔
(تذکرۃ الموتیٰ والقبور)

चहुंचता है। इमाम अबू हनीफ़ा व इमाम मालिक व इमाम अहमद भी इसी के क़ायल है और हाफ़िज़ शमसुद्दीन बिन अब्दुलवाहिद ने फ़रमाया है कि मुसलमान क़दीम से शहर में जमा होकर मुर्दों के लिए क़ुरआन ख़्वानी करते है पस इस पर इजमाअ है।

39. शैखुल मुहद्दिसीन हज़रत अल्लामा शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है-

آرے زیارت و تبرک بقبور صالحین و امداد ایشاں بایصال ثواب و تلاوتِ قرآن و دعائے خیر و تقسیم طعام و شیرینی امر مستحسن و خوب است باجماع علماء
(فتاویٰ عزیزی)

हां सालिहीन की क़ब्रों की ज़ियारत और उनकी क़ब्रों से बरकत हासिल करना और ईसाले सवाब, तिलावते क़ुरआन दुआए ख़ैर, तक़सीमे तआम, व शीरीनी से उनकी मदद करना बहुत ही बेहतर और ख़ूब है और इस पर उलमाए उम्मत का इजमा है।

(फ़तावा अज़ीज़ी)

मय्यत के लिए तस्बीह व कल्मा पढ़ना

40. हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि जब हज़रत सअद इब्न मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हुई तो

हमने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। फिर उनको क़ब्र में उतार कर उन पर मिट्टी डाल दी गई। बाद अज़ान हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तकबीर व तस्बीह पढ़ना शुरू कर दिया। देर तक पढ़ते रहे।

فَقِيلَ يَا رَسُولَ اللهِ لِمَ سَبَّحْتَ ثُمَّ كَبَّرْتَ؟ قَالَ لَقَدْ تَضَايَقَ عَلَى هٰذَا الْعَبْدِ الصَّالِحِ قَبْرُهُ حَتّٰى فَرَّجَهُ اللهُ عَنْهُ۔

(مشکوٰۃ ص۲۶)

तो किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपने तस्बीह व तकबीर क्यों पढ़ी? फ़रमाया इस नेक बन्दा पर उसकी क़ब्र तंग हो गई थी हमारी तस्बीह व तकबीर के सबब से अल्लाह ने उसको फ़राख़ कर दिया है।

(मिश्कात शरीफ़ स0 26)

इस हदीस से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम का क़ब्र पर तस्बीह व तकबीर पढ़ना और उनकी तस्बीह व तकबीर से साहिबे क़ब्र को फ़ाइदा पहुंचना अज़हर मिनश्शम्स है। अगर ग़ौर किया जाये तो इससे बाद अज़ दफ़न क़ब्र पर अज़ान देने का मसला भी समझ में आ सकता है।

41. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो फ़रमाया कि इन दोनों क़ब्रो वालों को अज़ाब हो रहा है और वह किसी बहुत बड़े गुनाह की वजह से नही बल्कि एक तो पेशाब करने के वक़्त छींटों से नही बचता था। और दूसरा

चुग़लख़ोर था।

ثُمَّ اَخَذَ جَرِيْدَةً رَطْبَةً فَشَقَّهَا بِنِصْفَيْنِ ثُمَّ غَرَزَ فِىْ كُلِّ قَبْرٍ وَّاحِدَةً قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ لِمَ صَنَعْتَ هٰذَا؟ فَقَالَ لَعَلَّهٗ اَنْ يُّخَفَّفَ عَنْهُمَا مَالَمْ يَيْبِسَا۔

(بخاری، مسلم، مشکوٰۃ)

फिर आपने खजूर की एक तर शाख़ ली और दरमियान से चीरकर उसके दो हिस्से करके दोनों क़ब्रों पर गाड़ दिये। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपने ऐसा क्यों किया? फ़रमाया इस लिए कि जब तक यह शाख़ें हरी रहेंगी उनके अज़ाब में तख़फ़ीफ़ रहेगी।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात)

इस हदीस में चंद बातें क़ाबिले ग़ौर है। अव्वल यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आलमे बरज़ख़ का हाल भी पोशीदा नही है। दोम (दूसरे) यह कि वह क़ब्र वाले अपनी ज़िन्दगी में जिस गुनाह का इरतकाब करके गिरफ़्तारे अज़ाब हुए थे आपको उसका इल्म था। सोम (तीसरे) यह कि आपने तर शाख़ें क़ब्र पर रखकर उनको तख़फ़ीफ़े अज़ाब का बाइस क़रार दिया।

अब सवाल यह है कि तख़फ़ीफ़े अज़ाब का बाइस सिर्फ़ वह शाख़ें थीं या कुछ और सिर्फ़ शाख़ों को क़रार दिया जाये तो सूखने के बाद भी शाख़ों का क़ब्र पर होना बाइसे तख़फ़ीफ़े अज़ाब होना चाहिए। हालांकि ऐसा नहीं। मालूम हुआ कि तख़फ़ीफ़े अज़ाब का बाइस सिर्फ़ वह शाख़ें ही नही बल्कि उनकी वह तस्बीह है जो वह पढ़ती है क्योंकि

وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِہٖ *व इम्-मिन शैयिन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही0* हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह बयान करती है। और चूंकि शाख़ों का सूख जाना उनकी मौत है। और मौत से तस्बीह मौकूफ़ हो गई। लिहाज़ा साबित हुआ कि तख़फ़ीफ़े अज़ाब का बाइस शाख़ों की तस्बीह थी। जब शाख़ों की तस्बीह बाइसे तख़फ़ीफ़े अज़ाबे क़ब्र है तो बन्दों की तस्बीह भी यक़ीनन बाइसे तख़फ़ीफ़े अज़ाबे क़ब्र है। जैसा कि पहली हदीस से साबित है।

नीज़ यहां से यह भी साबित हुआ कि क़ब्रों पर फूल डालना जायज़ है। क्योंकि खजूर की तर शाख़ों की तरह तरोताज़ा फूल वग़ैरह भी अल्लाह तआला की तस्बीह पढ़ते है।

बाज़ लोग यह कहा करते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शाख़ें इस लिए रखीं कि उनसे अज़ाब में तख़फ़ीफ़ हो जाये। तुम जो औलिया अल्लाह की क़ब्रों पर फूल डालते हो तो मालूम हुआ कि तुम भी उनको गिरफ़्तारे अज़ाब समझते हो, इस लिए फूल डालते हो कि उनके अज़ाब में कमी हो जाये। तो इस के मुतअल्लिक़ अर्ज़ यह है कि तस्बीह सिर्फ़ उन लोगों को ही मुफ़ीद नही जो गिरफ़्तारे अज़ाब हों बल्कि उनको भी मुफ़ीद है जो ग़रीक़े रहमत हों। अगर तस्बीह गिरफ़्तारे अज़ाब के लिए तख़फ़ीफ़े अज़ाब का बाइस है तो ग़रीक़े रहमत के लिए ख़ूशी व मुसर्रत और रफ़अे दरजात का बाइस है। चुनांचे बहुत से सहाबए किराम और बुज़ुर्गानि दीन ने बवक़्ते वफ़ात वसीयतें की है कि हमारी क़ब्रों पर खजूर की तर शाख़ें रखा करना, ना मालूम मुन्किरीन इन पाक लोगों के मुतअल्लिक़ क्या गुमान

करेंगे? शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है कि "क़ब्र पर फूल और .ख़ुश्बू वाली कोई चीज़ रखना साहबे क़ब्र की रूह की मुसर्रत का बाइस है और यह शरअन साबित है।"

(फ़तावा अज़ीज़िया जिल्द अव्वल मुलख़्ख़सन)

42. इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलिफ़ सानी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है-

بیاران و دوستان فرمایند کہ ہفتاد ہزار بار کلمہ طیبہ لاالہ الا اللہ بروحانیت مرحومی خواجہ محمد صادق بروحانیت مرحومہ ہمشیرہ اُم کلثوم بخوانند و ثواب ہفتاد ہزار بار دیگر را بروحانیت دیگرے از دوستاں دُعا و فاتحہ مسئول است۔

(مکتوبات شریف)

यारों और दोस्तों को कह दे कि सत्तर हज़ार मर्तबा कलमा तय्यबा लाइला-हा इल्लल्लाह मरहूम ख़्वाजा मुहम्मद सादिक़ की रूहानियत के लिए और सत्तर हज़ार मर्तबा उनकी हमशीरा मरहूमा उम्मे कुलसूम की रूहानियत के लिए पढ़े और सत्तर हज़ार कलमा का सवाब एक की रूह को और सत्तर हज़ार कलमा का सवाब दूसरे की रूह को बख़्शें. दोस्तो से फ़ातिहा और दुआ के लिए इल्तेमास है।

(मकतूबात शरीफ़)

43. मौलवी मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी बानी मदरसा देवबन्द लिखते है-

हज़रत जुनेद के किसी मुरीद का रंग यकायक मुतग़ैय्यर

हो गया। आपने सबब पूछा तो बरूए मुकाशफ़ा उसने कहा कि अपनी माँ को दोज़ख़ में देखता हूं। हज़रत जुनेद ने एक लाख पांच हज़ार बार कभी कलमा पढ़ा था। यूं समझ कर कि बाज़ रिवायतों में इस क़दर कलमे के सवाब पर वादए मग़फ़िरत है। अपने जी ही जी में उस मुरीद की माँ को बख़्श दिया और उसको इत्तलाअ न की। मगर बख़्शते ही क्या देखते है कि वह नौजवान हश्शाश बश्शाश है। आपने फिर सबब पूछा। उसने अर्ज़ किया कि अब अपनी वालिदा को जन्नत में देखता हूं। सो आपने उस पर यह फ़रमाया कि उस जवान के मुकाशफ़ा की सेहत तो मुझ को हदीस से मालूम हुई और हदीस की तसहीह उसके मुकाशफ़ा से हो गई।

(तहज़ीरून्नास)

माली इबादात

मय्यत के लिए सदक़ा व ख़ैरात करना

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती है कि एक शख़्स ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरी माँ मर गई है और उसने बवक़्ते वफ़ात कुछ वसीयत नही की।

فَهَلْ لَهَا اَجْرٌ اِنْ تَصَدَّقْتُ؟ قَالَ نَعَمْ۔

अगर मै सदक़ा करूं तो क्या उसको सवाब पहुंचेगा? आपने फ़रमाया हां।

(मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बुख़ारी किताबुल वसाया, मुअत्ता इमाम मालिक, अबूदाऊद)

45. हज़रत सअद बिन इबादा रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा का इन्तेक़ाल हो गया तो उन्होंने अर्ज़ किया।

يَا رَسُوْلَ اللهِ هَلْ يَنْفَعُهَا اَنْ اَتَصَدَّقَ عَنْهَا؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَعَمْ فَقَالَ حَائِطُ كَذَا وَكَذَا صَدَقَةٌ عَنْهَا-

(بخاری نسائی کتاب الوصایا)

या रसूलल्लाह! अगर मै उसकी तरफ़ से सदक़ा करूं तो क्या उसको नफ़ा पहुंचेगा? आपने फ़रमाया हां पहुंचेगा! हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तो फिर मेरा फुलां बाग़ उसकी तरफ़ से सदक़ा है।

(बुख़ारी, नसाई, किताबुल वसाया, मुअत्ता इमाम मालिक, किताबुल अक़ज़िया)

46. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते है कि एक शख़्स ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी माँ मर गई है।

اَنْفَعُهَا اِنْ تَصَدَّقْتُ عَنْهَا قَالَ نَعَمْ قَالَ فَاِنَّ لِيْ مِخْرَافًا وَاُشْهِدُكَ اَنِّيْ قَدْ تَصَدَّقْتُ عَنْهَا-

(ترمذی کتاب الزکوٰۃ)

अगर मै उसकी तरफ़ से सदक़ा करूं तो क्या उसको नफ़ा पहुंचेगा? आपने फ़रमाया हां पहुंचेगा। उसने कहा मेरा एक बाग़ है और मै आपको गवाह करके कहता हूं कि मैने उस बाग़ को उसकी तरफ़ से सदक़ा कर दिया।

(तिर्मिज़ी किताबुज़्ज़कात)

इन तीनों हदीसों से साबित हुआ कि मरने वाले के अज़ीज़ों में से अगर कोई सदक़ा व ख़ैरात इस नीयत से करे कि इससे मुर्दे को नफ़ा पहुंचे तो मुर्दे को यक़ीनन नफ़ा पहुंचता है।

47. हज़रत सअद बिन इबादा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मेरी माँ मर गई है।

فَاَیُّ الصَّدَقَةِ اَفْضَلُ قَالَ الْمَاءُ فَحَفَرَ بِئْرًا وَقَالَ هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ-
(ابوداؤد کتاب الزکوٰۃ)

तो कौनसा सदक़ा अफ़ज़ल है (जो माँ के लिए करूं) फ़रमाया पानी। तो हज़रत सअद ने कुंवा खुदवाया। और कहा कि यह सअद की माँ के लिए है।

इस हदीस में यह बात निहायत ही क़ाबिले ग़ौर है कि हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जलीलुलक़द्र सहाबी फ़रमा रहे है *हाज़िही लि-उम्मि सअ़द* कि यह कुंवा सअद की माँ के लिए है। यानी उनकी रूह को सवाब पहुंचाने की ग़रज़ से बनवाया गया है। इससे सराहतन साबित हुआ कि जिस की रूह को सवाब पहुंचाने की ग़रज़ से कोई सदक़ा व ख़ैरात की जाये अगर उस सदक़ा और ख़ैरात और नियाज़ पर मजाज़ी तौर पर उसका नाम लिया जाये यानी यूं कहा जाये कि यह सबील हज़रत इमाम हुसैन और शोहदाए करबला रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए है। या यह खाना, या यह नियाज़ सहाबा केबार या अहले बैत अतहार, या ग़ौसे आज़म, या ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के लिए है। तो हरगिज़-हरगिज़ इस सबील का पानी और वह खाना व नियाज़ वग़ैरह हराम न होगा। वरना फिर यह भी कहना पड़ेगा कि उस कुंवे का पानी हराम था

हालांकि उस कुंवें का पानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन और बाद में ताबेईन तबअ ताबेईन और अहले मदीना ने पिया।

क्या कोई मुसलमान कह सकता है कि इन सब मुक़द्दस हज़रात ने हराम पानी पिया था? मआज़ अल्लाह कोई मुसलमान तो ऐसा नहीं कह सकता। जिस कुंवें के मुतअल्लिक़ यह कहा गया कि यह सअद की माँ के लिए है। उस कुंवे का पानी नबी करीम अलैहित्तयह वत्तस्लीम और सहाबा किराम के नज़दीक हलाल व तय्यब है तो जिस सबील के पानी के मुतअल्लिक़ यह कहा जाये कि यह इमाम हुसैन और शोहदाए करबला रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के लिए है या यह नियाज़ वगैरह फुलां के लिए है तो वह मुसलमानों के नज़दीक भी हलाल व तय्यब है।

48. हज़रत सालेह बिन दिरहम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हम हज के वासते मक्का मुकर्रमा पहुंचे तो वहां हमें हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाह अन्हा मिले और फ़रमाया तुम्हारे शहर बसरा के क़रीब एक बस्ती है जिसका नाम अबल्ला है उसमें एक मस्जिद इशार है लिहाज़ा तुम में से कौन मेरे साथ वादा करता है कि उस मस्जिद में मेरे लिए दो या चार रकअतें पढ़े?

وَيَقُولُ هٰذِهٖ لِاَبِیْ هُرَيْرَةَ
(مشکوۃ ص۴۶۸)

और कहे कि यह रकअतें अबू हुरैरह के वासते है।

(मिश्क़ात स0 468)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना आपने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला मस्जिद इशार से शोहदा

को उठाएगा जो शोहदाए बदर के साथ होंगे।

इस हदीस में गौर फ़रमाइये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक जलीलुलक़द्र सहाबी फ़रमा रहे है कि मेरे लिए नमाज़ पढ़ना और यूं कहना هٰذِهٖ لِاَبِیْ هُرَیْرَةَ *हाज़िही लिअबी हुरैरहत:* कि यह नमाज़ अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए है। जिससे मालूम हुआ कि इबादते बदनी का सवाब दूसरे शख़्स को पहुंचाया जा सकता है। ख़्वाह वह ज़िन्दा हो या मुर्दा।

यह भी याद रहे कि नमाज़ एक ख़ास इबादत है जो सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिए है उसके मुतअल्लिक़ भी फ़रमाया कि यूं कहना कि यह अबू हुरैरह के लिए है। मालूम हुआ कि जिस इबादत का सवाब जिसको पहुंचाना हो उसका नाम ले। यानी यूं कहे कि यह फुलां के लिए है तो जायज़ है और हदीस से साबित है। यह भी मालूम हुआ कि वह मक़ामात जो फ़ज़ीलत व शरफ़ रखते है वहां इबादत व नेकी करना बहुत ही बाइसे फ़ज़ीलत और अज्र व सवाब है।

49. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

اِذَا تَصَدَّقَ اَحَدُكُمْ بِصَدَقَةٍ تَطَوُّعًا فَيَجْعَلُهَا عَنْ اَبَوَيْهِ فَيَكُوْنُ لَهُمَا اَجْرُهُمَا وَلَا يَنْتَقِصُ مِنْ اَجْرِهٖ شَيْئًا۔

जब तुम मे से कोई नफ़्ली सदक़ा करे तो चाहिए कि अपने वालिदैन को सवाब पहुंचाये पस उस सदक़ा का सवाब उन दोनों के लिए भी पूरा होगा और सदक़ा करने वाले के सवाब मे भी कोई कमी नही होगी।

(طبرانی اوسط شرح الصدور ص ۱۲۹) (तिबरानी औसत, शरहुस्सुदूर स० 129)

50. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब कोई शख़्स मर जाता है तो उसके मर जाने के बाद उसके घर वाले उसके लिए सदक़ा व ख़ैरात करते है तो जिबरील अमीन उस सदक़े व ख़ैरात को एक नूरानी तबक़ में रखकर मरने वाले की क़ब्र पर लेजा कर कहते है।

يَا صَاحِبَ الْقَبْرِ الْعَمِيْقِ هٰذِهٖ هَدِيَّةٌ اَهْدَاهَا اِلَيْكَ اَهْلُكَ فَاقْبَلْهَا فَتَدْخُلُ عَلَيْهِ فَيَفْرَحُ بِهَا وَيَسْتَبْشِرُ وَيَحْزَنُ جِيْرَانُهُ الَّذِيْنَ لَمْ يُهْدٰى اِلَيْهِمْ شَيْءٌ۔
(شرح الصدور ص ۱۲۹)

ऐ गहरी क़ब्र वाले यह हदिया व तोहफ़ा तेरे घर वालों ने तुझे भेजा तू इसको क़बूल कर, तो वह क़ब्र वाला उसको देखकर बहुत खुश होता है और (दूसरों को) खुशख़बरी देता है उसके हमसाये जिनकी तरफ़ उनके घर वालों की तरफ़ से हदिया नहीं पहुंचता ग़मगीन और अफ़सुर्दा होते है।

(शरहुस्सुदूर स0 129)

51. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मैने पूछा कि हम अपने मुर्दों के लिए दुआयें और उनकी तरफ़ से सदक़ात व ख़ैरात और हज वग़ैरह करते है क्या यह चीज़ें मुर्दों को पहुंचती है?

فَقَالَ اِنَّهٗ يَصِلُ اِلَيْهِمْ وَيَفْرَحُوْنَ بِهٖ كَمَا يَفْرَحُ اَحَدٌ

आपने फ़रमाया बेशक यह चीज़ें उनको पहुंचती है और वह उनसे खुश होते है जैसा कि तुम एक दूसरे के हदिये से

كُمْ بِالْهَدِيَّةِ (مسند امام احمد)

खुश होते हो।

(मुसनद इमाम अहमद)

52. अल्लामा अलाउद्दीन अली बिन मुहम्मदुल बग़दादी साहिबे तफ़सीरे ख़ाज़िन फ़रमाते है कि -

إِنَّ الصَّدَقَةَ عَنِ الْمَيِّتِ تَنْفَعُ الْمَيِّتَ وَيَصِلُهُ ثَوَابُهَا وَهُوَ اِجْمَاعُ الْعُلَمَاءِ (تفسیر خازن)

बिला शक व शुबहा मय्यत की तरफ़ से सदक़ात देना मय्यत के लिए नाफ़ेअ व मुफ़ीद है और उस सदक़े का मय्यत को सवाब पहुंचता है और इस पर उलमा का इजमा है।

(तफ़सीर ख़ाज़िन).

53. हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है-

وشیر برج بنا بر فاتحہ بزرگے بقصد ایصالِ ثواب بروحِ ایشاں پزند و بخورانند مضائقہ نیست جائز است و اگر فاتحہ بنام بزرگے دادہ شود اغنیار اہم خوردن جائز است۔ (زبدۃ النصائح ص۱۳۲)

दूध चावल (खीर) किसी बुज़ुर्ग की फ़ातिहा के लिए उनकी रूह को सवाब पहुंचाने की नीयत से पकाने और खाने मे कोई मुज़ाइक़ा नही है। जायज़ है और किसी बुज़ुर्ग की फ़ातिहा दी जाये तो मालदारों को भी खाना जायज़ है।

(ज़ुबदत्तुन्नसाइह स० 132)

54. शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है-

وطعامیکہ آں نیاز حضرت امامین

वह खाना जो हज़रत

نمایند برآں قل وفاتحہ ودرود خواندن متبرک می شود وخوردن او بسیار خوبست
(فتاوی عزیزی)

हुसैन की नियाज़ के लिए पकाया जाये और उस पर कुल व फ़ातिहा दुरूद पढ़ा जाये वह मुतबर्रक हो जाता है और उसका खाना बहुत ही अच्छा है। (फ़तावा अज़ीज़ोया)

55. मौलवी इस्माईल देहलवी तक़वीयतुल ईमान वाले लिखते है-

پس ہر عبادتیکہ از مسلمان ادا شود وثواب آں بروح کسے از گزشتگان برساند وطریق رسانیدن آں دعا رخیر بجناب الٰہ است پس ایں خود البتہ بہتر ومستحسن است ودر خوبی ایں قدر امر از امور مرسومہ فاتحہا واعراس ونذر ونیاز اموات شک وشبہہ نیست
(صراط مستقیم ص۵۵)

पस हर वह इबाबदत जो मुसलमान अदा करे और उसका सवाब किसी गुज़रे हुए की रूह को पहुंचाये और उसके लिए अल्लाह की बारगाह मे दुआ करे तो यह बहुत ही बेहतर और ख़ूब है और रुसूम मे फ़ातिहा पढ़ने, उर्स करने और मुर्दों की नज़र व नियाज़ करने की रस्मों की ख़ूबी मे शक व शुबहा नही है।

(सिराते मुस्तक़ीम स0 55)

56. दूसरी जगह है।

نہ پندارند کہ نفع رسانیدن باموات باطعام وفاتحہ خوانی خوب نیست چہ ایں معنی بہتر وافضل است

कोई यह ख़्याल न करे कि मुर्दों को तआम और फ़ातिहा ख़्वानी के साथ नफ़ा पहुंचाना ख़ूब नही है क्योंकि यह बात

बेहतर और अफ़ज़ल है।

(صراط مستقیم ص۶۴) (सिराते मुस्तक़ीम स0 64)

57. मौलवी अशरफ़ अली थानवी का ईसाले सवाब के मुतअल्लिक़ फ़तवा मुलाहिज़ा हो।

सवाल :- ईसाले सवाब की निस्बत बाज़ वक़्त ख़दशा गुज़रता है कि अगर नेक अमल का सवाब दूसरों की रूह को बख़्शा जाये तो बख़्शने वाले के लिए क्या नफ़ा हुआ। अलबत्ता मुर्दों को इससे नफ़ा पहुंचता है। हज़रत इस ख़दशा को रफ़ा फ़रमा दें तो फ़िदवी को इत्मिनान होगा।

जवाब:-

جواب :- فی شرح الصدور یخرج الطبرانی عن ابی عمر وقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا تصدق احدکم صدقۃ تطوعا فیجعلھا عن ابویہ فیکون لھما اجرھا ولا ینقص من اجرہ شیئ۔

यह हदीस नस है उसमें कि सवाब बख़्शा देने से भी आमिल के पास पूरा सवाब रहता है और सहीह मुस्लिम की हदीस *मन सन्न सुन्नतन हसनतन अलहदीस* से भी उसकी ताईद होती है। (इमदादुलफ़तावा स0 399)

मय्यत के लिए .क़ुरबानी व बर्दा आज़ाद करना

58. हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती है कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मेंढा

ज़बह करके फ़रमाया-

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنْ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَمِنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ۔

ऐ अल्लाह! इसको मेरी और मेरी आल की तरफ़ से और मेरी उम्मत की तरफ़ से क़बूल फ़रमा।

(مسلم، ابوداؤد کتاب الاضاحی) (मुस्लिम, अबू दाऊद किताबुल अज़ाही)

59. हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मेंढा ज़बह करके फ़रमाया।

هٰذَا عَنِّيْ وَعَمَّنْ لَّمْ يُضَحِّ مِنْ اُمَّتِيْ۔

यह क़ुरबानी मेरी उम्मत के उस शख़्स की तरफ़ से है जिसने क़ुरबानी नही की।

(ابوداؤد کتاب الاضاحی) (अब दाऊद किताबुल उज़ाही)

60. हज़रत जनश रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि मैने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दो क़ुरबानियां करते हुए देख कर पूछा कि आप दो क़ुरबानियां क्यों करते है? फ़रमाया-

اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوْصَانِيْ اَنْ اُضَحِّيَ عَنْهُ فَاَنَا اُضَحِّيْ عَنْهُ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे वसीयत फ़रमाई थी कि मै एक क़ुरबानी उनकी तरफ़ से किया करूं। लिहाज़ा एक अपनी और एक उनकी तरफ़ करता हूं।

(ترمذی، ابوداؤد) (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

इन तीनों हदीसों से साबित हुआ कि एक का अमल दूसरे को फ़ायदा पहुंचाता है। देखिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने खुद अपनी आल और अपनी उम्मत की तरफ़ से क़ुरबानी की है और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी तरफ़ से कुरबानी करने की वसीयत फ़रमाई है और फिर हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू का इस पर अमल पैरा होना इस बात की रौशन दलील है कि ज़िन्दा का अमल जो वफ़ात पाने वाले के लिए किया जाये वह मुफ़ीद व नाफ़ेअ है।

61. हज़रत ज़ैद बिन असलम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है।

جَاءَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اُعْتِقُ عَنْ اَبِيْ وَقَدْ مَاتَ قَالَ نَعَمْ۔
(شرح الصدور ص ١٢٩)

कि एक शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरा बाप फ़ौत हो चुका है क्या मै उसकी तरफ़ से बर्दा आज़ाद कर दूं? फ़रमाया हां कर।

(शरहुस्सुदूर स0 129)

62. हज़रत अबू जअफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है–

اِنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا كَانَا يُعْتِقَانِ عَنْ عَلِيٍّ بَعْدَ مَوْتِهٖ
(شرح الصدور ص ١٢٩)

कि हसन व हुसैन रदियल्लाहु अन्हुमा हज़रत अली की वफ़ात के बाद उनकी तरफ़ से बर्दे आज़ाद किया करते थे।

(शरहुस्सुदूर स0 129)

सदक़ए जारिया

63. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन जब इन्तक़ाल करता है तो उसका अमल ख़त्म हो जाता है। मगर सात चीज़ों का सवाब उसको मरने के बाद भी मिलता रहता है। अव्वल अगर उसने किसी को इल्मे दीन सिखाया तो उसको बराबर सवाब मिलता रहेगा। जब तक वह इल्म दुनिया में जारी रहेगा। दोम यह कि उसकी नेक औलाद हो, जो उसके हक़ में दुआ करती रहे। सोम यह कि क़ुरआन शरीफ़ छोड़ गया हो। चहारुम यह कि उसने मस्जिद बनवाई हो। पंजुम यह कि उसने मुसाफ़िर खाना बनवाया हो। शशुम यह कि उसने कुंवां या नहर वग़ैरह खुदवाई हो। हफ़्तुम यह कि उसने अपनी ज़िन्दगी में सदक़ा दिया हो तो यह चीज़ें जब तक मौजूद रहेंगो उसका सवाब मिलता रहेगा। (शरहुस्सुदूर)

इन दलाइले हक़्क़ा से अज़हर मिनश्शम्स हो गया कि ज़िन्दों की बदनी, माली और मुरक्कब इबादत का सवाब मुर्दों को पहुंचता है और उस पर उम्मत का इजमा व इत्तेफ़ाक़ है बशर्ते कि सवाब पहुंचाने की नीयत हो, यह ईसाले सवाब गुनहगारों के लिए अफ़ू व बख़्शिश और नेकोकारों के लिए रफ़अे दर्जात और खुशी व मुसर्रत का मूजिब है। नीज़ अल्लाह तआला सवाब पहुंचाने वाले को भी पूरा-पूरा अज्र व सवाब अता फ़रमाता है।

तीजा, साता, ग्यारहवीं, चेहलुम, उर्स या बर्सी करना

जब आपने मसलए ईसाले सवाब को अच्छी तरह समझ लिया है तो यह भी जान लीजिये कि ग्यारहवीं, कूंडे, सबील, तीजा, चेहलुम और बरसी वग़ैरह यह सब ईसाले सवाब के नाम है और ईसाले सवाब क़ुरआन व हदीस से साबित है जैसा कि ऊपर बयान हुआ तो अब इनके जायज़ होने में क्या शुबहा रहा।

मय्यत पर तीन दिन ख़ास कर सोग किया जाता है। बुज़ुर्गों ने फ़रमाया तीन दिन सोग क्या है। अब उठने से पहले चंद घर के अफ़राद मिल कर कुछ सदक़ा करो। कुछ पढ़ो। और उसका सवाब मय्यत की रूह को पहुंचा कर उठो उसका नाम सोयम या तीजा मशहूर हो गया। और हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह का भी तीजा हुआ। चुनांचे शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते है।

روز سوئم کثرت ہجوم مردم آنقدر بود کہ بیروں از حساب ست ہشتاد و یک کلام اللہ بشمار آمدہ و زیادہ ہم شدہ باشد و کلمہ را حصر نیست
(ملفوظات عزیزی ص۵۵)

कि तीसरे दिन लोगों का हुजूम इस क़दर था कि शुमार से बाहर है। इक्यासी कलामुल्लाह ख़त्म हुए बल्कि उससे भी ज़्यादा हुए होंगे और कलमा तय्यबा का तो अन्दाज़ा ही नही कि कितना पढ़ा गया। (मलफूज़ाते अज़ीज़ी स0 55)

हज़रत ताऊस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है-

إِنَّ الْمَوْتٰى يُفْتَنُوْنَ فِيْ قُبُوْرِهِمْ

कि बेशक मुर्दे सात रोज़ तक अपनी क़ब्रों मे आज़माये

سبعا فكانوا يستحبون ان يطعم عنهم تلك الايام (شرح الصدور، ابونعيم فى الحلية)

जाते है तो सहाबए किराम सात रोज़ तक उनकी जानिब से खाना खिलाना मुस्तहब समझते है।

(शरहुस्सुदूर, अबू नईम फ़िलहिल्लह)

चुनांचे शैखुल-मुहद्दिसीन हज़रत शाह अब्दुल हक़ साहब मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते है।

وتصدق کرده شود از میت بعد دفین او از عالم تا هفت روز۔ (اشعة اللمعات شرح مشكوٰة)

और मय्यत के मरने के बाद सात रोज़ तक सदक़ा करना चाहिए।

(अशअतुल लमआत शरहे मिश्कात)

बुज़ुर्गानि दीन फ़रमाते है कि मय्यत की रूह चालीस दिन तक अपने घर और मक़ामात से ख़ास तअल्लुक़ रहता है। जो बाद में नहीं रहता चुनांचे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि मोमिन पर चालीस रोज़ तक ज़मीन के वह टुकड़े जिन पर वह खुदा तआला की इबादत और इताअत करता था और आसमान के वह दरवाज़े जिन से कि उसके अमल चढ़ते थे और वह कि जिन से उसकी रोज़ी उतरती थी, रोते रहते है। (शरहुस्सुदूर स० 23) इसी लिए बुज़ुर्गानि दीन ने चालीसवें रोज़ भी ईसाले सवाब किया कि अब चूंकि वह ख़ास तअल्लुक़ मुन्क़तअ हो जाएगा लिहाज़ा हमारी तरफ़ से रूह को कोई सवाब पहुंच जाये ताकि वह खुश हो, और इन सब की असल यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सैयदुश्शोहदा हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए तीसरे, दसवें, चालीसवें दिन और छठे महीने और

साल के बाद सदक़ा दिया।

(कज़ा फ़िल अनवारुस्साअत, मजमूअतिर्रिवायत, हाशियह ख़ज़ानतुर्रिवायात)

मालूम हुआ कि ईसाले सवाब यह मुरव्विजा तीजा, सातवां, चेहलुम, और ग्यारहवीं वग़ैरह दर असल ईसाले सवाब के नाम है और यह जायज़ है। इनको बिदअत सइया या लग़वियात वग़ैरह कहना गुमराही है।

खाना आगे रखकर कलामे इलाही पढ़ना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह किया तो मेरी वालिदा (उम्मे सलीम) ने खाना बतौरे तोहफ़ा व हदिया पकाया और मेरे हाथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेरा सलाम कहना और अर्ज़ करना कि इस मौक़ा पर यही जो कुछ है उसे क़बूल फ़रमा लें। वह खाना लेकर मै आपके पास पहुंचा और वालिदा का सलाम व पयाम अर्ज़ किया, आपने फ़रमाया ऐ अनस इसे रख दे और फुलां-फुलां को बुला! मै बुलाता गया यहां तक कि तीन सौ आदमी जमा हो गये।

فَرَاَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيَضَعُ يَدَهُ عَلَى تِلْكَ الْحَيْسَةِ وَتَكَلَّمَ بِمَا شَاءَ

तो मैने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आपने उस खाने पर अपना दस्ते मुबारक रखा और जो चाहा पढ़ा।

बस फिर क्या था वह खाना इस क़दर बाबरकत हुआ कि

लोग शिकम सैर होगए। आपने मुझ से फ़रमाया यह जो बाक़ी है उसे लेजा! मैने जब उस बक़िया खाने को देखा तो अन्दाज़ा न कर सका कि जो मै लाया था वह ज़्यादा था या यह ज़्यादा है।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात स0 539)

देखिये इस हदीस से साबित है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खाना आगे रखकर उस पर जो चाहा पढ़ा और उसमें बहुत ज़्यादा बरकत हुई।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि ग़ज़वए तबूक में लश्करे इस्लाम को भूक ने बहुत सताया तो हज़रत उमर ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप लश्करे इस्लाम से बचा हुआ तोशा मंगवाकर दुआए बरकत फ़रमाइये! चुनांचे आपने दस्तरख़्वान बिछवाकर बचा हुआ खाना मंगवाया। सहाबए किराम में से कोई मुट्ठी भर खजूरें, कोई रोटी का टुकड़ा और कोई बाकिल्ला वग़ैरह ग़रज़ कि जो कुछ किसी के पास बचा खुचा था वह ले आया और दस्तरख़्वान पर थोड़ी से चीज़ें जमा होगयी।

فَدَعَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْبَرَكَةِ ثُمَّ قَالَ خُذُوْا فِيْ اَوْعِيَتِكُمْ
(مشکوٰۃ ص۵۳۸)

तो उस पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई फिर आपने फ़रमाया अपने तोशे दान भर लो।

(मिश्कात स0 538)

चुनांचे इन चीज़ों में इतनी बरकत हुई कि तमाम लश्करे इस्लाम ने अपने तोशा दान भर लिये और पेट भर खाया और खाना फिर भी बच रहा तो फिर फ़रमाया कि मै गवाही देता हूं

कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही और मै उसका रसूल हूं।

इस हदीस से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमं का सामने खाना रखकर दुआए बरकत फ़रमाना साबित है, अगरचे इस मज़मून की और भी अहादीस है मगर बखौफ़े तेवालत इन्ही पर इकतफ़ा किया जाता है। इन दोनों हदीसों से साबित हो गया कि हुज़ूर ने खाना सामने रखकर उस पर कुछ पढ़ा भी है और दुआ भी फ़रमाई है। मालूम हुआ कि खाना आगे रखकर उस पर कलाम पढ़ना और दुआ करना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है। लिहाज़ा जायज़ है।

मसला ईसाले सवाब हदियए नाज़रीन है उम्मीद है नाज़रीन हज़रात इन दलाइले हक्क़ा को ब-नज़रे ग़ौर देखने के बाद ईसाल सवाब की अहमियत को समझेंगे, और उन लोगों की तंग नज़री और मुब्लग़े इल्म का भी अन्दाज़ा लगा लेंगे जो फ़ातिहा ख़्वानी को लग़्वियात या बिदअते सइया कहकर लोगों को इस से रोकते है और कहा करते है कि इस का कोई सुबूत नहीं!

फ़ातिहा का तरीक़ा

बेहतर है कि बावज़ू क़िबला मुशर्रफ़ा की तरफ़ रुख़ करके दो ज़ानूं बैठें और सामने वह चीज़ें रखें जिनका सवाब पहुंचाना मक़सूद है। अगर वह अशिया थोड़ी मिक़दार में हों तो सब को सामने रखलें। अगर फ़ातिहा देने वाले के अलावा और हज़रात भी मौजूद हों तो तिलावत के वक़्त खामोशी अख़्तियार करलें। बात-चीत बिल्कुल न करें सबसे पहले तीन मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ें। मसलन-

दरूद शरीफ़:- اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ۔

अगर यह दुरूद शरीफ़ याद न हो तो वह दुरूद शरीफ़ पढ़लें जो याद हो। फिर اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़कर —— بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ —— पढ़ें। उसके बाद सूरह काफ़िरून पढ़ें।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۗ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۠

फिर तीन मर्तबा सूरह इख़लास पढ़ें और हर मर्तबा इसके इब्तेदा में बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ें।

सूरह इख़लास قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۧ (پاره ۳۰ سورت ۱۱۲)

फिर बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ एक मर्तबा सूरह फ़लक़ पढ़ें।

सूरह फ़लक़ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۧ

फिर बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ सूरह नास पढ़ें।

सूरह नास قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۙ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۧ (پاره ۳۰ سورت ۱۱۴)

फिर बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ एक मर्तबा सूरह फ़ातिहा पढ़ें। सूरह फ़ातिहा

سورہ فاتحہ : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ (پارہ ۳۰ سورت ۱)

सूरह फ़ातिहा के इख़्तेताम पर एक मर्तबा *आमीन* कहे फिर बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ सूरह बक़रह की इब्तेदाई पांच आयतें पढ़ें। सूरह बक़रह

سورہ بقرۃ کی ابتدائی پانچ آیتیں : الٓمّٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَا اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ (سورہ بقرہ آیت ۱ تا ۵)

फिर एक मर्तबा बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़कर मुन्दर्जा ज़ैल पांच आयतें पढ़ें। ① وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ② اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ ③ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ ④ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ ⑤ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝ (قرآن)

फिर फ़ातिहा पढ़ने वाला और तमाम हाज़रीन वही दुरूद शरीफ़ पढ़ें जो पहले लिखा गया या जो भी दुरूद शरीफ़ याद हो वह पढ़ें।

उसके बाद سُبۡحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۚ وَسَلٰمٌ عَلَى الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۚ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۚ पढ़ें।

फ़ातिहा ख़्वानी के बाद दोनों हाथ उठाकर अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ मांगें इलाही जो कुछ पढ़ा है अगर उसमें कोई ग़लती रह गई हो तो उसे माफ़ फ़रमा कर अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा और अपनी शाने करीमी से इस पढ़ने पर अज्र व सवाब अता फ़रमा। हम उन तमाम चीज़ों का सवाब तेरे महबूब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे आली में पेश करते है क़बूल फ़रमा और हु.ज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल तमाम अम्बिया व मुरसलीन और आल व अज़वाजे मुतह्हरात व जुमला सहाबए किराम अलैहिम रिज़्वान और तमाम ताबेईन, तबअ ताबेईन, अइम्मए मुजतहिदीन और जुमला औलियाए कामिलीन की ख़िदमत में सवाब पेश करते है क़बूल फ़रमा और कुल मोमिनीन व मोमिनात की अरवाह को उनका सवाब पहुंचा। खुसूसन फुलां (अपने उस अज़ीज़ रिश्तेदार या बुज़ुर्ग का नाम लें जिसको सवाब पहुंचाना चाहते है) को इनका सवाब पहुंचा। फिर अपने लिए और जुमला हाज़िरीन के लिए और कुल मुस्लिमीन के लिए दुआए ख़ैर करें खुसूसन ख़ात्मा बिलख़ैर की दुआ ज़रूर करें क्योंकि आजकल इस्लाम का लिबादा ओढ़कर नये-नये फ़ितने उठ रहे है दुआ के इख़्तेताम पर दोनों हाथ चेहरे पर फेरलें।

फिर फ़ातिहा पढ़ने वाला और तमाम हाज़रीन वही दुरूद शरीफ़ पढ़ें जो पहले लिखा गया या जो भी दुरूद शरीफ़ याद हो वह पढ़ें।

उसके बाद سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ पढ़ें।

फ़ातिहा ख़्वानी के बाद दोनों हाथ उठाकर अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ मांगें इलाही जो कुछ पढ़ा है अगर उसमें कोई ग़लती रह गई हो तो उसे माफ़ फ़रमा कर अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा और अपनी शाने करीमी से इस पढ़ने पर अज्र व सवाब अता फ़रमा। हम उन तमाम चीज़ों का सवाब तेरे महबूब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे आली में पेश करते है क़बूल फ़रमा और हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल तमाम अम्बिया व मुरसलीन और आल व अज़वाजे मुतह्हरात व जुमला सहाबए किराम अलैहिम रिज़वान और तमाम ताबेईन, तबअ ताबेईन, अइम्मए मुजतहिदीन और जुमला औलियाए कामिलीन की ख़िदमत में सवाब पेश करते है क़बूल फ़रमा और कुल मोमिनीन व मोमिनात की अरवाह को उनका सवाब पहुंचा। खुसूसन फुलां (अपने उस अज़ीज़ रिश्तेदार या बुज़ुर्ग का नाम लें जिसको सवाब पहुंचाना चाहते है) को इनका सवाब पहुंचा। फिर अपने लिए और जुमला हाज़िरीन के लिए और कुल मुस्लिमीन के लिए दुआए ख़ैर करें खुसूसन ख़ात्मा बिलख़ैर की दुआ ज़रूर करें क्योंकि आजकल इस्लाम का लिबादा ओढ़कर नये-नये फ़ितने उठ रहे है दुआ के इख़्तेताम पर दोनों हाथ चेहरे पर फेरलें।

इल्तिजा

दौरे हाज़िर ने मुसलमानों को फ़ितना अंगेज़ियों और सैहूनी कोशिशों में मुब्तला करके रख दिया है। लालच ने इनका शिराज़ा बिखेर दिया है।

ज़रूरत इस बात की है कि हम सब मिलकर *वआतसेमो बिहबलिल्लाह* के ईमान अफ़रोज़ अमल से इस्लाम दुश्मन मुहिम को लरज़ा बर अंदाम करें।

इस किताबचे में मुस्तनद अहादीस और क़ुरआने अज़ीम की आयाते मुबैयिनात मुताला के लिए पेश है। उम्मीद है कि ग़लत फ़हमी के शिकार हज़रात इन का मुताला फ़रमाकर अपने आपको ज़ीबाइशे इल्म से मुज़य्यन फ़रमायेंगे।

खुदा तआला हमें क़ुरआन समझने और समझाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन0

वस्सलाम

तालिबे दुआ

हाफ़िज़ क़मरुद्दीन रज़वी

हमारी हिन्दी मतबूआत

1. सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर	मुफ़्ती खलील अहमद बरकाती	100.00
2. जन्नती ज़ेवर	मौलाना अब्दुलमुस्तफ़ा आज़मी	90.00
3. निज़ामे शरीअत	अल्लामा गुलाम जीलानी मेरठी	60.00
4. सवानेह हज़रत अवैस करनी	आमिर गीलानी	20.00
5. इस्लामी ज़िन्दगी	मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ नईमी	20.00
6. इस्लामी तालीम	अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी	20.00
7. हु.कूके वालिदैन	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	15.00
8. मज़ारात पर औरतों की हाज़िरी	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	15.00
9. तम्हीदे ईमान	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	15.00
10अज़ाने कब्र	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	12.00
11बारह माह की नफ़्ल नमाज़ें	सय्यद शाह तुराबुल हक कादरी	15.00
12सच्ची नमाज़ मअ़ नीयत नामा	अबुल कलाम अहसनुल कादरी	10.00
13सच्ची नमाज़ मअ़ नीयत नामा (पॉकेट)	अबुल कलाम अहसनुल कादरी	8.00
14मस्नून दुआयें (पॉकेट)	अब्दुलमुबीन नोमानी	8.00
15ईसाले सवाब की शरई हैसियत	मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी ओकाड़वी	8.00
16अंगूठे चूमने का मसला	मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी ओकाड़वी	5.00
17जियारते .कुबूर	मौलाना अब्दुल अज़ीज़ फतहपुरी	5.00
18तरीकए फातिहा मअ़ सुबूत	मौलाना इलियास कादरी	5.00
19तबलीग़ी जमाअ़त का फरेब	सय्यद शाह तुराबुल हक कादरी	5.00
20तबलीग़ी जमाअ़ अहादीस की रौशनी में	अल्लामा अरशदुल कादरी	5.00
21बहारे शबाब	अल्लामा अब्दुल अ़लीम मेरठी	8.00

नअ़तिया मजमूआ

1. हदाइके बख़्शिश	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	30.00
2. इन्तेखाबे आला हज़रत	तरतीब अब्दुल मुबीन नोमानी	8.00
3. मौजे नूर	तरतीब मौलाना मकसूद आलम रज़वी	10.00
4. बारिशे रहमत	हाफिज़ मुहम्मद कमरुद्दीन रज़वी	10.00
5. यादगारे बदर	यूसुफ रज़ा कादरी	8.00

राबते का पता:—

रज़वी किताब घर
425, मटिया महल जामा मस्जिद
दिल्ली—6 फोन : 3264524

रज़वी किताब घर
114, गैबी नगर, भिवंडी—421302
ज़िला थाना (महाराष्ट्र) फोन : 55389

Rs.8